ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.1, Issue: 152, April: 2025
Paper ID: RRJ468848
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ468848.pdf

तैत्तिरीय उपनिषद का समाज में महत्व

By
GAYATRI SONI
Ph.D. Scholar (Sanskrit)
&
Dr. SATYAPRAKASH DWIVEDI
Assistant Professor (Sanskrit)
Sabarmati University, Ahmedabad, Gujarat

सारांश

बुद्धिजीवियों का उत्सुकता स्वाभाविक है। 'उपनिषद्' प्राचीन भारतीय जिज्ञासा का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। वेदान्त नामक इस ज्ञानकाण्ड को आनुमानिक ने 300 हजार वर्ष पहले ही अपनी बुद्धिशक्ति के द्वारा सृष्टि के रहस्य से नित्य जीवनयापन और शुद्ध निर्मल चरित्रनिर्माण का उपहार दिया था, जो स्थानिक और कालगत सीमाओं को पार करके एक अनन्त उपदेश है। मानव परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति होने के कारण, जीवन की कला और जीवनोपरान्त विषयक तत्त्वों की खोज को सामान्य रूप से दर्शन कहा जा सकता है। दृष्टिकोण से देश की मनीषा सुरक्षित है। यही कारण है कि दर्शन निधि की खोज करके और बार–बार सुंदर उपदेश देकर ऋषियों ने देश को गौरवान्वित किया है। कृष्णजुर्वेद की श्तैत्तिरीय उपनिषद्श भी कई उपदेशों का समाहार है। तीन हजार साल पहले, अरण्यचारी और नदीमातृक सभ्यता में दिए गए आदर्श जीवनचरित बहुत महत्वपूर्ण और अनुशंसनीय थे. आज, यन्त्रसर्वस्व और मानवीय मूल्यों को खो चुके इस समाज में भी उस आदर्श जीवनचरित का महत्व महत्वपूर्ण है। ब्रह्मानन्दवल्ली और भृगुवल्ली में सिर्फ शुद्ध ब्रह्मविद्या का वर्णन है। उसकी सफलता के लिए गुरुकृपा और मन की एकाग्रता की जरूरत है। इसके लिए शीक्षावल्ली में कयि प्रकार की उपासना और शिष्य एवं आचार्यसम्वन्धी शिष्टाचार बताया गया है। इसलिए ओपनिषद् सिद्धान्त को समझने के लिए सबसे पहले शीक्षावल्ल्युक्त उपासनादि का ही उपयोग करना चाहिए।

मोक्ष प्राप्त करना और समाज को सुसंगठित करना हमारे जीवन का एक अनिवार्य लक्ष्य हैं। शिक्षा के बिना वास्तविक ज्ञान हासिल नहीं हो सकता। शीक्षावल्ली उपनिषद का पहला अध्याय हमें इस शिक्षा का परिचय देता है।

शब्द कोश: उपनिषद्, वैदिक वाड्.मय, तैतीरीय उपनिषद्, वेद

शिक्षावल्ली में शिक्षा से समाज का कल्याण

ॐ शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम। साम सन्तानः। इत्युक्तः शीक्षाध्यायः।।[1]

वर्णादिका उच्चारण को सिखाने को शिक्षा कहते हैं, या वर्णादि शिक्षा। उपनिषद् के पाठ में अर्थबोध मुख्य मुद्दा है। किंतु शव्दसमूह के शुद्ध उच्चारण से अर्थबोध में कमी आ सकती है। ईसी के कारण शिक्षा का प्रयोजन होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा चाहिए। इस बारे में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है शिक्षा आदमी को अन्धकार से बचाता है। मानव मन की अज्ञातता को दूर करके समाज का कल्यान बनाते हैं। इस उपनिषद् ने हमें बताया कि ज्ञान को सिर्फ ग्रहण नहीं करना चाहिए; इसे आत्मसात करने के लिए निरंतर उपासना या चर्चा करनी चाहिए। शिक्षा आदमी को अन्धकार से बचाता है। मानव मन की अज्ञातता को दूर करके समाज का कल्यान बनाते हैं। इस उपनिषद् ने हमें बताया कि ज्ञान को सिर्फ ग्रहण नहीं करना चाहिए; इसे आत्मसात करने के लिए निरंतर उपासना या चर्चा करनी चाहिए। इसका वाह्यार्थ है संहिताविषयक उपासना या दर्शन को समझाना। अर्थात, उपनिषद् का ज्ञान अभ्यास करने के लिए पाठ के साथ साथ श्रद्धापूर्वक उपासना भी करनी चाहिए। परन्तु इसका अन्तर्निहितार्थ यह है कि केवल उपनिषद् ही नहीं, कोयि भी ग्रन्ह को श्रद्धापूर्वक पाठ करने के साथ ही उसका बहुत समय तक उपासना करना चाहिए, क्योंकि मनुष्य चित्त बहुत चंचल है। वार–वार चर्चा करने से कोई भी विषय याद नहीं रहता। यदि पाठ्य विषय स्मरणीय नहीं होगा तो उसका महत्व क्या रहेगा? जवाब नहीं होगा क्योंकि पाठ्य विषय मनुष्य की कृपा में नहीं आता तो निरर्थक होता है।

ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.1, Issue: 152, April: 2025
Paper ID: RRJ468848
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ468848.pdf

अभ्यासो हि कर्मसु कौशलमावहति । नहि सकृन्निपतितमात्रेणोदविन्दुरपि ग्रावणि. निम्नतामादधतीति।।[2]

अर्थात् चर्चा, उपासना या अभ्यास ही कर्मसम्पादन में नैपुण्यता देते हैं। जब जलविन्दु एक बार पतित हो जाता है, तो वह प्रस्तरखण्ड में कोई क्षत नहीं बना सकता। चित्तशुद्धि उपासना का मुख्य फल है। प्रत्येक जनसाधरण के लिए मन की शुद्धि चाहिए। यदि मन मलिन है, तो अध्यात्म विद्या का विकास और पार्थिव लाभ भी कभी नहीं मिलेगा।

ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।[3]

इस मंत्र में परमेश्वर अपने निकट गुरु शिष्य को सुरक्षा, ज्ञान, सफलता और सहायता देते हैं। और एक दूसरे को घृणा न करके सभी बाधा का सुख चाहते हैं। इस मन्त्र से प्रतीत होता है कि शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं क्योंकि शिक्षक अपने आप को शिक्षित करते समय समृद्ध होते हैं। यदि शिष्य और आचार्य मिलकर काम करें तो कोयि भी बड़ा काम कर सकता है। एकता से कार्य संपादन के अधिक उदाहरण मिलते हैं।

आ मायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। वि मायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। प्र मायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। दमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा। शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा।।[4]

आचार्य इस श्रुति के माध्यम से ब्रह्मविद्या और वेदाध्ययन का सर्वत्र प्रचार करने के लिए ब्रह्मचारिगन को आह्वान कर रहे हैं। वैदिक ऋषिया एक उत्कृष्ट शिक्षक है। वह आपके शिष्य को शिक्षित करता है।

दोनों एक दूसरे के भीतर घुसना चाहते हैं। एकात्मता एक दूसरे के भीतर मिलती है। उपासक का सर्वोच्च सिद्धि है कि वह अपने पूज्य देवता के साथ अकेले रहता है। इस प्रकार, इस उपनिषद् हमें सिर्फ ज्ञान देता है। इस उपनिषद् से हमें न केवल गुरु–शिष्य की एकता का ज्ञान मिलता है, बल्कि विश्व भर में सभी साधरण को एकजुट होकर काम करने का उपदेश भी मिलता है। तैत्तिरीय उपनिषद् का अध्ययन करने पर इस उपनिषद् का वर्तमान समाज में महत्व स्पष्ट होता है। इस उपनिषद् में बहुत से उपदेश हैं जिनका अर्थ वहत ही सही है। वर्तमान समाज को अवक्षय के रास्ते पर चलने से बचाने के लिए इस उपनिषद् की उपदेश अनिवार्य है।

प्राचीन काल में आचार्यो की विद्या प्रधानता

आचार्या प्रियं धनमाहृत्य।।[5]

अर्थात, प्राचीन काल में आचार्यगण विद्या प्रदान करने के लिए अर्थ का उपयोग नहीं करते थे। किंतु प्रत्येक विद्यार्थी ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद गुरुदक्षिणा के रूप में कुछ धन देना था। इसका अर्थ यह है कि कोयि शिक्षा संस्थान को सही ढंग से चलाने के लिए अधिक धन और मदद की जरूरत है। यदि शिक्षक अपने शिक्षा के प्रतिदान में गुरुदक्षिणा या अन्य किसी तरह की सहायता नहीं देता तो उसे लगता है कि वह शिक्षा का मूल अर्थ नहीं जानता है। ज्ञतावोध एक शिक्षित व्यक्ति का लक्षण है। कृतज्ञता व्यक्त करने के कई तरीके हैं, जैसे आर्थिक सहायता, प्रतिष्ठान की सुरक्षा के लिये प्रशासनिक या राजनैतिक विकल्पों की सहायता इत्यादि। सत्य और दया की नीति को अपने जीवन में अपनाने का सबसे अच्छा तरीका है शिक्षक महाशय से सीखना।

सत्यान्न प्रमदितव्यम्।[6]

अर्थात् सत्य को धोखा नहीं देना चाहिए। वास्तव में, भूलकर भी झूठ बोलना नहीं चाहिए। सत्यवचन और सतता के बिना जीवन व्यर्थ और रहस्यमय हो जाता है। अर्थनैतिक क्षेत्र सतत होना चाहिए। सत्यवचन एक परिवारीक सदस्य में प्रेम वन्धन बनाए रखने के लिए आवश्यक है। मुण्डक उपनिषद् कहता है कि सत्य और मिथ्या के युद्ध में सत्य ही विजेता होता है। सत्य का मार्ग कभी नहीं छोड़ना चाहिए। सत्य को बचाने की कोई जरूरत नहीं होती, लेकिन मिथ्या को उजागर होने का भय हमेशा रहता है। निष्ठावान व्यक्ति ही अपने जीवन को सरल और मजबूत बना सकता है।

ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.1, Issue: 152, April: 2025
Paper ID: RRJ468848
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ468848.pdf

धर्मान्न प्रमदितव्यम्।[7]

अर्थात् धर्म को बदनाम नहीं करना चाहिए। धर्म शब्द अनुष्ठेय कर्मों का वाचक होने से उसका सम्मान नहीं करना प्रमाद है; इसके बजाय, धर्म का सम्मान करना चाहिए। जिस समय वायु सभी फूल को स्पर्श करती है और उसका मेहेक चारों ओर फैलता है, उसी समय धर्म भि यो सत्य होता है और मनुष्य का कल्याणकारी होता है। मनुष्य को अपने धर्म से कभी नहीं छोड़ना चाहिये। धर्म ही लोगों को उनके कर्मों का रास्ता बताता है। यह सबसे महत्वपूर्ण बात है कि अपने परिवार और समाज को बुरे लोगों से लेकिन अच्छे लोगों से दूर रखें।

भूत्यै न प्रमदितव्यम्।[8]

इस उपनिषद् से हमें पता चलता है कि हम एक सामाजिक प्राणी हैं और समाज के हर व्यक्ति के प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। इस उपनिषद् आपको एक सुंदर और संपन्न जीवन की ओर ले जाता है। उपनिषद् समाज बहुत सम्पन्न था, लेकिन सभी ऋषि ने कहा था कि वैध तरीके से धन कभी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति अवैध तरीके से अर्थ प्राप्त करता है, तो उसे न सिर्फ अर्थ मिलेगा बल्कि भय और मानसिक तनाव भी मिलेगा। अर्थहीनता कभी भी मन को शांत नहीं कर सकती। यव कोयि सतता के साथ उपार्जन करते हैं, तो वह अपने हर एक स्वप्न को पूरा नहीं कर पाता, लेकिन उसे यो मन का शान्ति मिलता है, जो उसे जीवन भर खुशी देता है।

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।[9]

अर्थात् स्वाध्याय और प्रवचन को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। ज्ञान स्वाध्याय और प्रवचन से प्राप्त होता है। हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि हम ज्ञान के प्रति हर व्यक्ति को सम्मान दें। ज्ञान देना महत्वपूर्ण है। ज्ञान देने से क्षय नहीं होता वह ज्ञान देने वाले और ज्ञान लेने वाले दोनों को समृद्ध करता है। इससे हमारा अंतरात्मा जागता है। और अंतरदृष्टि का जागरण करने से व्यक्ति सही और गलत का भेद कर सकता है। इससे मन शांत रहता है और बहस निर्मुल होती है। हमारा कर्तव्य है कि हम अध्ययनरत रहें।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्।[10]

अर्थात, जप, प्रार्थना, ध्यान आदि आध्यात्मिक कार्यों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जीवनयुद्ध के सामने रहने के लिए मन को शांत रखना आवश्यक है; आध्यात्मिक शक्ति से संपन्न व्यक्ति ही ऐसा कर सकते हैं। इससे आत्मविश्वास बढ़ता है।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव।[11]

अर्थात् माता, पिता, आचार्य या अतिथि पूजन में कभी दुर्व्यवहार नहीं करना चाहिए। वास्तव में, ये सभी देवता की तरह पूजा की जा सकती है। हमारे माता–पिता हमारे जन्मदाता, पालनकर्ता, शिक्षक और अतिथि हैं। इन सभी को जीवन भर चाहिए। गुरु, माता और पिता केवल साक्षात् देवता ही नहीं हैं; इन सभी का प्रणाम मन्त्र भी है।

मातृ प्रणाम मन्त्र–

भूमेर्गरीयसी माता स्वर्गादुच्चतरः पिता। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।[12]

पितृ प्रणाम मन्त्र–

पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः। पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।।[13]

आचार्य प्रणाम मन्त्र–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुगुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।[14]

वर्तमान समाज में लोग संपत्ति और धन को अधिक महत्व देते हैं। हमारे श्रद्धा का अर्थ बदल गया है। इसलिए माता–पिता को अपने बच्चों से बुरा व्यवहार हुआ है, आचार्य को अपने शिष्य से सही सम्मान नहीं हुआ है और अतिथि को अनादर हुआ है। माता–पिता अपने पुत्र को वृद्धाश्रम में छोड़ देते हैं जब उनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है। क्या यही हमारी जिम्मेदारी है? धन और संपत्ति ही सब कुछ नहीं होते। आज माता–पिता,

RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
ISSN: 2321-4708
Vol.1, Issue: 152, April: 2025
Paper ID: RRJ468848
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ468848.pdf

शिक्षक और अतिथि के साथ जो व्यवहार हो रहा है, हमारे साथ भी कभी हो सकता है। यह विचार करना चाहिए क्योंकि समय किसी के लिए नहीं रुकता। सम्मान पाना है तो सम्मान देना है। सदाचार का बचाव इसके लिए, गुरुजनों को सम्मान देते हुए उनके व्यवहार का अनुकरण करना चाहिए। वर्तमान समाज में जो अव्यवस्हा चल रहा है उसका निवारण करने के लिए 'मातृदेवो भव' कहना चाहिए। पितृदेवो भव जय गुरुदेव। आपका स्वागत है।इस उपदेश को प्रचारित करना अनिवार्य है।

श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया अदेयम्।[15]

यदि कोई आर्थिक या शारीरिक सहायता दी जाती है, तो उसे पूरी श्रद्धा से करना चाहिए। दान करने की आदत हमें धन की मोह से मुक्त करती है। दान करते समय हमें कभी भी गर्व या अहंकार नहीं होना चाहिए। किसी असहाय व्यक्ति को दान देने से मन शुद्ध और शुद्ध होता है और उस व्यक्ति को भी मदद मिलती है। इससे हम परवर्ती जन्म को एक नई उम्मीद और दिशा दे सकते हैं।

अन्न प्राणयों को नियंत्रित –

अन्न भी हमारी शरीर की रक्षा और सुरक्षा करता है। शरीर में भी अन्न प्राण को नियंत्रित करता है। शरीर के अभाव में कोई भी पुरुषार्थ पूरा नहीं हो सकता। हमारे देश में कुछ लोगों को भोजन नहीं मिलता और कुछ लोग भोजन का अपमान करते हैं। हम कभी भी अन्न का अपमान नहीं करना चाहिये अगर एक निवाला अन्न से किसी का भूख मिट जाता है। यदि कोयि निवासस्थान पर आते हैं तो उसे नहीं भूलना चाहिए। उसकी क्षमतानुसार उसका अवश्य ही सत्कार करना चाहिए, जैसे अन्न, जल और आसन। इससे वह अन्नवान्, कीर्तिमान्, प्रजा, पशु और ब्रह्मतेज से सम्पन्न होता है। इस प्रकार अन्नकी महिमा का वर्णन करके विभिन्न आश्रयों में उसकी उपासना का वर्णन किया गया है।

अन्नं न निन्द्यात्। तद्व्रतम्। प्राणो वा अन्नम् शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्।[16]

निष्कर्ष

वर्तमान समय में बहुत से राजनैतिक और अर्थनैतिक वादोंका एक खतरनाक जाल फैल गया है, इसलिए जिन महान दार्शनिक विचारों ने हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को विचारशील बनाकर आध्यात्मिक उन्नति की ओर प्रेरित किया था, उनकी चर्चा अब बंद हो गई है। इससे वर्तमान में राग–द्वेष और हिंसा–प्रतिहिंसाका व्यापक प्रवाह हो रहा है। इस उपनिषद् से शिक्षा और जीवनादर्श के बारे में बहुत अच्छा ज्ञान मिलता है। और अन्न से आनन्द तक ब्रह्मचौतण्य का विकाश और आनंदमीमांसा मिलता है। इससे पता चलता है कि आनन्द ही जगत का सृष्टि–स्थिति–लय है। जीवन बदलता रहता है। आज युवा है, कल वृद्ध होगा और समय के नियम से पंचत्व प्राप्त होगा। तो हमें खुशी से जीवन जीना चाहिए। अर्थात, इस उपनिषद् हमें आनंद प्राप्त करने का रास्ता देता है और हमारे जीवन को समृद्ध और परिपूर्ण बनाता है।

तथ्यसूत्र

1. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली द्वितीय अनुवाक श्लोक 1
2. काव्यादर्श पृष्ठा 233
3. तैत्तिरीयोपनिषद् शान्तिपाठ
4. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली चतुर्थ अनुवाक श्लोक 3
5. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 1
6. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 1
7. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 1
8. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 1
9. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 1
10. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 2

ISSN: 2321-4708
RESEARCH REVIEW
The Academic Research Issue
Open Access, Peer-Reviewed & Refereed Journal
An International Multidisciplinary Journal
Vol.1, Issue: 152, April: 2025
Paper ID: RRJ468848
www.researchreviewonline.com
Publishing URL: https://www.researchreviewonline.com/upload/articles/paper/RRJ468848.pdf

11. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 2
12. मातृ–पितृ–स्तोत्रम् श्लोक 1
13. मातृ–पितृ–स्तोत्रम् श्लोक 2
14. श्रीगुरुस्तोत्रम् श्लोक 3
15. तैत्तिरीयोपनिषद् शीक्षावल्ली एकादश अनुवाक श्लोक 3
16- तैत्तिरीयोपनिषद् भृगुवल्ली सप्तम अनुवाक श्लोक 1

सहायक ग्रन्थसूची –

1. गम्भीरानन्द, स्वामी ;सम्पादकद्ध – उपनिषद् ग्रन्थावली ;प्रथम भागद्ध, उद्बोधन कार्यालय, कलकाता, 1962.
2. गम्भीरानन्द, स्वामी ;सम्पादकद्ध – उपनिषद् ग्रन्थावली; द्वितीय भागद्ध, उद्बोधन कार्यालय, कलकाता, 1964.
3. गम्भीरानन्द, स्वामी ;सम्पादकद्ध – उपनिषद् ग्रन्थावली; तृतीय भागद्ध, उद्बोधन कार्यालय, कलकाता, 1965.
4. वन्द्योपाध्याय, प्रणवकुमार भट्टाचार्य, निवेदिता– संस्कृत शिक्षार पथनिर्देश, शोभा पावलिकेशन, कलकाता , तृतीय संस्करण 2014.
5. वन्द्योपाध्याय, शान्ति– वैदिक साहित्येर रूपरेखा , संस्कृत पुस्तक भाण्डार, कलकाता , आगष्ट 2003.
6. सेन, अतुलचन्द्र तत्त्वभूषण, सीतानाथ घोष, महेशचन्द्र ;अनुवादक एवम सम्पादकद्ध– उपनिषदः, हरफ प्रकाशनी, कलकाता , फेब्रुयारी 2000.